प्र० - निम्न में से किसी एक लेखक/साहित्यकार का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियो पर प्रकाश डालिए। अंक – 5

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन-परिचय :-

आ० हजारी प्रसाद जी का जन्म सन् 1907 ई० को बलिया जिले के दुबे के छपरा नामक गाँव में हुआ था। पिता का अनमोल द्विवेदी तथा माता का नाम ज्योतिष्मती था। आप सरयूपारीण ब्राह्मण थे। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

1930 ई० में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि तथा 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय से डी०लिट० की उपाधि प्राप्त की। कई विभागों के अध्यक्ष एवं श्रेष्ठ शिक्षक कार्य करते हुए 18 मई सन् 1979 ई० को हिंदी का यह महान साहित्यकार संसार को सूना करके पंचतत्व में लीन हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ :-

द्विवेदी जी का हिंदी निबंध और आलोचनात्मक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। वे उच्च कोटि के निबंधकार और सफल आलोचक हैं।

कृतियाँ:-

आलोचनात्मक कृतियाँ

- सूर साहित्य (1936)
- हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940)
- प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद (1952)

- कबीर (1942)
- नाथ संप्रदाय (1950)
- हिन्दी साहित्य का आदिकाल (1952)
- साहित्य का मर्म (1949)
- साहित्य सहचर
- कालिदास की लालित्य योजना
- मध्यकालीन बोध का स्वरूप
- हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास

निबंध संग्रह

- कल्पलता
- अशोक के फूल
- विचार और वितर्क
- विचार-प्रवाह
- कुटज
- विष के दन्त

उपन्यास-

- बाणभट्ट की आत्मकथा
- चारु चंद्रलेख
- पुनर्नवा
- अनामदास का पोथा

भाषा-शैली:-

आ० हजारी प्रसाद जी की भाषा, व्यावहारिक, संस्कृतनिष्ठ, प्राँजल परिमार्जित खड़ी बोली है। ।इनके साहित्य में वर्णनात्मक ,व्यंग्यात्मक, गवेषणात्मक के दर्शन होते हैं।

सहित्य में स्थान:-

आ० हजारी प्रसाद जी ने सूर, कबीर, तुलसी आदि पर जो विद्वत्तापूर्ण आलोचनाएं लिखी हैं, वे हिंदी में पहले नहीं लिखी गईं। उनका निबंध-साहित्य हिंदी की स्थाई निधि है। उनकी समस्त कृतियों पर उनके गहन विचारों और मौलिक चिंतन की छाप है। विश्व-भारती आदि के द्वारा द्विवेदी जी ने संपादन के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है।